

J. N. 121.990

ich mir für das Buch
vor, u. bedaure nur, dass
ich lediglich die eine
ältere Operette sehen
konnte. In der Hoffnung
vielleicht doch diesen
Herbst
in Wien zu sein, und es
nachzuholen, bin ich
Jhr ergebener

B. D.



Postk

Hochw. Frau

Johann Strauss

WIEN IV.

Gusshausstrasse 12/111



18.6.20.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

Postzeitung

Morgenblatt.

Nr. 1.

62. Jahrgang.

Redaktion: Gra3, Stempfergasse 7.

Gra3, 191

Hochgeehrte gnädige Frau !

Aus Ihrer Karte sehe ich, dass Sie methusalem-leidend wurden und wieder eine schlechte Nacht hatten, oder mehrere. Aber warum ? Dem Namen Strauss kann doch ein kritisches Ornament von heute weder schaden noch nützen. Bedauerlich sind höchstens die Menschen, die sich an Nichts mehr freuen können und für Nichts mehr Platz haben als ihre eignen Interessen. Das Journal las ich, namn jedoch nicht an, dass die wenigen Zeilen von J. seien. Schade, dass ich keine Stimme in Wien habe. Mir war Methusalem ein kl. Erlebnis. Das Weitere behalte